भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: खुशबू रचते हैं हाथ	कार्यपत्रिका की तिथिः ----------
संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टिफन	तिथिः----------
विद्यार्थी का नाम :----------	कक्षा : IX ब

1.	खुशबू रचनेवाले हाथ कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ-कहाँ रहते हैं	
उ.	खुशबू रचनेवाले हाथ बहुत ही गंदी बस्तियों में, नालों और कूड़े के ढेरों के आसपास बदबूदार स्थितियों में रहते हैं। उनका रहन-सहन बहुत गंदा होता है।	
2.	कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है	
उ.	उभरी नसों वाले, घिसे नाखूनों वाले हाथ, पीपल के पत्ते से नए-नए हाथ, जूही की डाल से खुशबूदार हाथ, गंदे कटे-पिटे हाथ, जख्म से फटे हाथ।	
3.	कवि ने यह क्यों कहा है कि खुशबू रचते हैं हाथ	
उ.	कवि ने खुशबू रचते हैं हाथ - कहकर श्रमिकों के श्रम का जयगान किया है। कवि कहना चाहता है कि मडदूरों के हाथ ही अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं। तथा सारी दुनिया को सुगंध से महमह कर देते हैं।	
4.	जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है वहाँ का माहौल कैसा होता है	
उ.	जिस बस्ती में, जिस गली-मुहल्ले में अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का वातावरम बहुत गंदगी - भरा होता है। वहाँ चारों ओर नालियाँ और कूड़े - करकट के ढेर जमा होते हैं।	
5.	इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देशय क्या है	
उ.	इस कविता का उद्देश्य है–मज़दूरों और कारीगरों की दुर्दशा का चित्रम करना और उनके उद्धार की चेतना जगाना। कवि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों का गंदगीपूर्ण वातावरण दिखाकर यह कहना चाहता है कि इनकी स्थितियों में सुधार होना चाहिए। इन्हें इतनी मजदूरी मिलनी चाहिए कि वे साफ-स्वच्छ वातावरण में साँस ले सकें। इनकी बस्तियों को साफ-स्वच्छ किया जाना चाहिए।	